



**भारतीय परम्परा**  
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

हिन्दी

# हनुमान चालीसा



[www.bhartiyaparampara.com](http://www.bhartiyaparampara.com)



# हनुमान चालीसा

## ॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।  
बरनऊं रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥  
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार ।  
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ॥

## ॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।  
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।  
राम लखन सीता मन बसिया ॥ 8

राम दूत अतुलित बल धामा ।  
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।  
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी ।  
कुमति निवार सुमति के संगी ॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।  
रामचन्द्र के काज सँवारे ॥

कंचन बरन बिराज सुबेसा ।  
कानन कुण्डल कुँचित केसा ॥ 4

लाय सजीवन लखन जियाए ।  
श्री रघुबीर हरषि उर लाये ॥

हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजै ।  
काँधे मूँज जनेउ साजै ॥

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।  
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥ 12

शंकर स्वयं/सुवन केसरी नंदन ।  
तेज प्रताप महा जगवंदन ॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।  
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं ॥

बिद्यावान गुनी अति चातुर ।  
राम काज करिबे को आतुर ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।  
नारद सारद सहित अहीसा ॥

## हनुमान चालीसा

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।  
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥

भूत पिशाच निकट नहिं आवै ।  
महावीर जब नाम सुनावै ॥ 24

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीदना ।  
राम मिलाय राज पद दीदना ॥ 16

नासै रोग हरै सब पीरा ।  
जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥

तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना ।  
लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥

संकट तै हनुमान छुडावै ।  
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥

जुग सहस्र जोजन पर भानु ।  
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥

सब पर राम तपस्वी राजा ।  
तिनके काज सकल तुम साजा ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।  
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥

और मनोरथ जो कोई लावै ।  
सोई अमित जीवन फल पावै ॥ 28

दुर्गम काज जगत के जेते ।  
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ 20

चारों जुग परताप तुम्हारा ।  
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥

राम दुआरे तुम रखवारे ।  
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥

साधु सन्त के तुम रखवारे ।  
असुर निकंदन राम दुलारे ॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।  
तुम रक्षक काहू को डरना ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।  
अस बर दीन जानकी माता ॥

आपन तेज सम्हारो आपै ।  
तीनों लोक हाँक तै काँपै ॥

राम रसायन तुम्हरे पास ।  
सदा रहो रघुपति के दासा ॥ 32



## हनुमान चालीसा

तुम्हरे भजन राम को पावै ।  
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥

जै जै जै हनुमान गोसाईं ।  
कृपा करहु गुरुदेव की नाई ॥

अंतकाल रघुवरपुर जाई ।  
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥

जो सत बार पाठ कर कोई ।  
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥

और देवता चित्त ना धरई ।  
हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।  
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥

संकट कटै मिटै सब पीरा ।  
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥ 36

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।  
कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥ 40

### ॥ दोहा ॥

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।  
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

